

DPN 6994

सत्वपूजा विधि SATWAPŪJĀ VIDHI

Title :

Run. No. 7719

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 10.0 x 23.5

Folios 3

Lines ( in a page ) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Folio 9.- धन अष्ट मंगलाभिषेक विधे कथ ॥ व्यास १, सितु २, सिद्ध ३.  
P. 7. 10.



धौ ४, ईका ५, गौ लोचन ६, पजेस्वां ७, न्हस्वत ॥ कता २ या  
गाथा पदपं विमे ।

Folio ॥ - ग्रह तिथि तक्षर वार शान्ति विधि ॥  
इति सहस्र पूजा विधि : समाप्तं ॥



सत्यपूजा विधि

असमावलासमगः सानधर्मिधः कनूधः सगगानि इः खहा निधः ॥  
असमरु सर्वगुधसिद्धिदायिन असमावलासमवनागधर्मिधः ॥ गग  
धः समः उपकानविद्युतगुधनगः नैधुका निकप्यासिमिक ॥ सर्वसत्व  
धः उवनसिद्धिदायिकविगता पमषः असमरुसिद्धिपूतः सग  
रुमालोककनूधवगताम्विना पुनिधनसिद्धिवाधधधर्म  
गा ॥ जगतार्थसाधनपनासमः किनिमरुगविनाविगमहाक  
पासना ॥ नहिनाधकाकनूधवाविकावलावजगतालाकवन्सिद्धिदा

मरागपुरत वः शानाय



स.पू. चिक॥ अमितामिर्गवसुसमाफितांगतासुगतिगमघपिअहासुधर्म  
 गा॥ प्रिसमयागतवसिद्धिदा ददुक्तुभववदानतासुगतिगां  
 सदा॥ सकलजिलावाववसिद्धि दायिकासुगतामुयध्वगतिगा  
 अनासुता॥ ॥ धनपदकि क्षमाथा॥ आकाशात्पादविक्र  
 लोदनादिनिधनपन॥ सहाव जसमयसत्ववजसत्वपसिद्ध  
 मे॥ १ ॥ सर्वाकुमामहोसि द्विमोहध्वर्याधिद्वेता॥ सर्व  
 वजधवावाजासिद्धिमपवमाकन॥ २ ॥ निर्दोषनाश्वर्यासिस्

एव  
 ८

सर्वनागभननागक॥ कल्वनसिद्धिमरुगवान्महानागभननागक॥ ३ ॥  
 अयुक्तुचधर्मागआदिमूककृथागक॥ समनरुदमेवात्मावाधिस  
 त्वपसिद्धम॥ ४ ॥ सर्वाकुमा महासिद्धिमोहध्वर्यागमुदया॥  
 सिद्धिवेजमहाकार्यादजगर्ताय नममा॥ ५ ॥ सर्वसत्वमना  
 व्यापिसर्वसत्वहृदिस्थित॥ सर्व सुत्वपिताथेवकायागसमया  
 गिता॥ येनसमयनसंज्ञनंप्रक्षया यात्ममधुल॥ मनसमयनमनाथका  
 मात्त्वपनिपूनयेन॥ ६ ॥ धनमूषमंगलाहिरवकवियकंथो॥ बालासि







गुरु ॥ अंनमान्नजयाय ॥ ॥ गृहनिधिनकृपवानमन्निविधिमाह ॥ मूलगु  
 नुमधुलस्रंष्टिदिग्राचार्यमै ॥ ४४ गगनवलियागध्वन ॥ गगव  
 वनडालेध्वनि ॥ यरूकधुल ॥ दनवेयकवादेदववायमलि  
 मिलास्रवजिनस्यंगकदेष्टुम्य ॥ गयकसिधालनजानटलकध  
 पनावाय ॥ ॥ सवायगुन ॥ मधुलवलि कलशान्या अगिस्थ  
 पनाअग्निकृति दवपूजा दवगा ॥ कृति ॥ धूलिधूनडा ॥ ॥ डकन ॥ गुन  
 दिगाचार्यनीनवनिध्वत्वादिबन्धनकावयगा ॥ ॥ अथध्यानम् ॥ डक ॥ ॥

फराणीन्दुरत वज्रान्त